

## रॉबर्ट वानॉय , निर्वासन से निर्वासन, व्याख्यान 6बी व्यवस्थाविवरण की तिथि, जोशुआ और विजय

सी। व्यवस्थाविवरण की तिथि

सी। "तारीख" है। हमने पहले इस पर बात की थी जब हमने हिती संधि प्रपत्र और पुराने नियम की वाचा सामग्री और मोज़ेक वाचा के बीच समानता पर चर्चा की थी। समय के साथ अंतर्राष्ट्रीय संधियों का स्वरूप भिन्न-भिन्न होता गया। जैसा कि आपको मेरी पिछली चर्चा से याद होगा, मेरेडिथ क्लाइन ने यह मामला बनाया था कि व्यवस्थाविवरण की पुस्तक हिती संधियों के क्लासिक रूप से मेल खाती है। संधि रूप में विकासवादी विकास को देखते हुए, मोज़ेक सामग्री मोज़ेक युग से मेल खाती है। हमने पहले इसी बारे में बात की थी, लेकिन मुझे वापस जाकर व्यवस्थाविवरण की तारीख की इस चर्चा पर इतिहास के बारे में कुछ और टिप्पणियाँ करने दीजिए।

1800 के दशक की शुरुआत में विल्हेम डी वेट नाम के एक जर्मन ने प्रस्ताव दिया कि व्यवस्थाविवरण की पहचान "कानून की किताब" से की जानी चाहिए, जिसे यहूदा के राजा योशियाह के समय में पुजारी हिल्किया ने मंदिर में पाया था। उस "कानून की किताब" की खोज से योशियाह के समय में सुधार हुआ। 2 राजाओं से हम कानून की खोज की तारीख 621 ईसा पूर्व बता सकते हैं। डी वेट ने कहा कि व्यवस्थाविवरण का उद्देश्य यरूशलेम में पूजा को केंद्रीकृत करना था, और उन्हें यह अध्याय 12 से मिला। मैं अध्याय 12 के विवरण में नहीं जाना चाहता . उस पर एक लंबी चर्चा है और यहां तक कि कुछ रूढ़िवादी विद्वान अध्याय 12 की व्याख्या करने के तरीके पर असहमत हैं। क्या अध्याय 12 में इस अर्थ में पूजा के केंद्रीकरण की आवश्यकता है कि यरूशलेम के अलावा कहीं भी कोई वैध पूजा नहीं होनी चाहिए? डी वेट ने इसकी व्याख्या इसी तरह की और अन्य विद्वानों ने भी की। डी वेट के अनुसार, यह विचार था कि यरूशलेम के धार्मिक नेता ही थे जिन्होंने व्यवस्थाविवरण की पुस्तक लिखी थी। उन्होंने इसे "पाया" और इसे प्रमाणिकता और अधिकार देने के लिए इसका श्रेय मूसा को दिया, जबकि वास्तव में यह मूसा की ओर से नहीं था। यह योशियाह के समय में यरूशलेम के धार्मिक नेताओं की ओर से था जो पूरी तरह से यरूशलेम

में पूजा को मजबूत करने की कोशिश कर रहे थे।

इस विचार को बाद में 19 वीं शताब्दी में जूलियस वेलहाउज़ेन ने अपनाया। जूलियस वेलहाउज़ेन पेंटाटेच की उत्पत्ति के दस्तावेजी स्रोत सिद्धांत के क्लासिक सूत्रीकरण के जनक थे। उन्होंने कहा कि यह सामग्री के इन चार स्रोतों से बना है: जे दस्तावेज़ (यहोवा नाम के पक्ष में), ई दस्तावेज़ (एलोहीम नाम के पक्ष में), डी दस्तावेज़ (ड्यूटेरोनॉमी के लिए) और पी दस्तावेज़ (निर्वासन के बाद का पुजारी) दस्तावेज़। वेलहाउज़ेन ने अपने साहित्यिक विश्लेषण को धार्मिक प्रणालियों के विकास के तरीकों के विकासवादी दृष्टिकोण के साथ जोड़ा। उनके विचार में, प्राचीन इज़राइल की धार्मिक व्यवस्था बहुदेववाद (कई देवताओं की पूजा) से हेनोथिज्म (यानी यह विचार कि अन्य देवता भी थे लेकिन हमारा भगवान उनसे बेहतर है) की ओर बढ़ गई, और फिर एकेश्वरवाद की ओर बढ़ गई (वहां है) केवल एक ईश्वर)। टाइपोलॉजी बहुदेववाद से हेनोथिज्म से एकेश्वरवाद की ओर कदम था। अंततः इसके साथ-साथ प्राचीन इज़राइल में पूजा की प्रणाली के भीतर वेदियों की बहुलता से एक विकास हुआ, जिसने कनानियों से पूजा की जगह ले ली। फिर योशियाह के समय में यह वेदियों की बहुलता से एक केंद्रीय अभयारण्य - पूजा के केंद्रीकरण - में स्थानांतरित हो गया। वह इस साहित्यिक विश्लेषण को उस तरह के विचार, पूजा के केंद्रीकरण में इज़राइल के विकास के साथ जोड़ते हैं। व्यवस्थाविवरण वेलहाउज़ेन के जेईडीपी सिद्धांत का सार बन गया क्योंकि उन कथित दस्तावेजों में से केवल एक को दिनांकित किया जा सकता था, और वह उसका डी दस्तावेज़ था, जिसके बारे में उन्होंने कहा कि वह अध्याय 12 से 26 तक शुरू होने वाली व्यवस्थाविवरण की पुस्तक का दिल और मूल था। अध्याय 12 यह अध्याय पूजा के केंद्रीकरण पर था। यदि डी की तिथि 621 ईसा पूर्व थी, तो जे और ई, जो कई वेदियों, अभयारण्यों और कई पूजा स्थलों की अनुमति देते थे, पहले के रहे होंगे। यदि आप 621 से पीछे मुड़कर देखें और जिन पर्वों को विनियमित किया गया है, वह व्यवस्थाविवरण के बाद था। यह वेलहाउज़ेन के जेईडीपी सिद्धांत के प्रमुख बिंदुओं का आधार बन गया जो इज़राइल की धार्मिक पहचान के विकास के इस विकासवादी विचार से जुड़ा था। उन्होंने तर्क दिया कि योशियाह के समय यरूशलेम के धार्मिक नेता यरूशलेम को छोड़कर कहीं भी सभी पूजा और बलिदान को समाप्त करना चाहते थे; इससे उन्हें देश के सभी लोगों पर

राजनीतिक और धार्मिक नियंत्रण मिल जाएगा। यह सिद्धांत 20<sup>वीं</sup> सदी के अधिकांश समय में प्रमुख सिद्धांत बन गया। जहां तक व्यवस्थाविवरण की तारीख का सवाल है, जेईडीपी आज भी अत्यधिक प्रभावशाली है, इसलिए अधिकांश लोग कहेंगे कि व्यवस्थाविवरण मोज़ेक काल से नहीं आया है, बल्कि बहुत बाद में, 7<sup>वीं</sup> सदी से आया है। योशिय्याह का

शताब्दी समय। ऐतिहासिक पुस्तकों पर व्यवस्थाविवरण का प्रभाव अब, यह कहते हुए कि, व्यवस्थाविवरण का प्रभाव सभी ऐतिहासिक पुस्तकों (जोशुआ, न्यायाधीशों, सैमुअल और किंग्स) के साथ-साथ भविष्यवाणी पुस्तकों में भी परिलक्षित होता है। यदि व्यवस्थाविवरण 621 ईसा पूर्व तक नहीं लिखा गया था, तो इसका मतलब है कि सभी ऐतिहासिक पुस्तकें और भविष्यवाणी पुस्तकें 621 ईसा पूर्व के बाद की रही होंगी, क्योंकि उनमें व्यवस्थाविवरण का प्रभाव है और वे व्यवस्थाविवरण की पुस्तक पर निर्भर हैं।

मार्टिन नोथ नाम के एक और विद्वान हैं जिन्होंने इज़राइल का इतिहास लिखा जो 20<sup>वीं</sup> सदी के उत्तरार्ध में बेहद प्रभावशाली हो गया और आज भी है। वह एक थीसिस लेकर आए जिसे " ड्यूटेरोनोमिस्टिक इतिहास" या " ड्यूटेरोनोमिस्टिक इतिहासकार की अवधारणा " कहा जाता है। उन्होंने कहा कि जोशुआ टू किंग्स निर्वासन के समय रहने वाले एक गुमनाम लेखक की उपज थे, जिन्होंने इज़राइल के इतिहास को व्यवस्थाविवरण के धर्मशास्त्र की श्रेणियों में रखा था। वह व्यवस्थाविवरणवादी इतिहास, जोशुआ टू किंग्स, एक राष्ट्र के रूप में इज़राइल के इतिहास में देर से रहने वाले एक लेखक का एकीकृत कार्य था।

ड्यूटेरोनोमिस्टिक हिस्टोरियन ( डीटीआरएच ) - ड्यूटेरोनॉमी प्रभाव

डीयूटेरोनॉमिस्टिक इतिहासकार, संक्षिप्त रूप से डीटीआरएच , बाइबिल अध्ययन की मुख्यधारा में है, जिसे सार्वभौमिक रूप से स्वीकार किया जाता है और शायद ही उस पर सवाल उठाया जाता है। आप देख सकते हैं कि यह क्या करता है - यह रिश्ते को इस अर्थ में बदल देता है कि इसका मतलब है कि हर चीज़ ड्यूटेरोनोमिक प्रभाव को दर्शाती है। (मैं ड्यूटेरोनोमिक से अलग शब्दों का उपयोग करने जा रहा हूं, जो नोथ का शब्द था, ताकि मैं जो कहना चाह रहा हूं उसे उसके

निर्माण से अलग कर सकूं। मैं ड्यूटेरोनोमिक प्रभाव के बारे में बात करना पसंद करता हूं।) जाहिर तौर पर जोशुआ में ड्यूटेरोनोमिक प्रभाव है; न्यायाधीशों, सैमुअल और किंग्स में भी ड्यूटेरोनोमिक प्रभाव है। सभी भविष्यवाणियों की पुस्तकों में व्यवस्थाविवरण प्रभाव है, लेकिन मुझे ऐसा लगता है कि यह इज़राइल की नींव से आता है जो एक राष्ट्र के रूप में इज़राइल की शुरुआत के दिनों में मूसा द्वारा रखी गई थी। (मोआब के मैदानों पर उस दूसरी पीढ़ी के उन संबोधनों को याद करें, जब वे कनान देश में पार कर गए थे।) हां, वहां व्यवस्थाविवरण का प्रभाव है, लेकिन उस अर्थ में नहीं जिस अर्थ में नोथ कह रहा था - कि कुछ व्यक्ति निर्वासन में रह रहे हैं 621 में लिखी गई पुस्तक के धर्मशास्त्र से इज़राइल के इतिहास को उन धार्मिक विचारों की श्रेणियों में पुनर्गठित किया, और ऐसा करते हुए, वास्तविक इतिहास को आसानी से विकृत कर दिया। दूसरे शब्दों में, क्या चक्र, उदाहरण के लिए, न्यायाधीशों की पुस्तक में कुछ ऐसा है जो वास्तव में घटित हुआ है, या क्या कोई व्यक्ति व्यवस्थाविवरण की पुस्तक के धर्मशास्त्र की श्रेणियों में इज़राइल के संशोधनवादी इतिहास को फिर से लिखने की कोशिश कर रहा है? यह बिल्कुल अलग बात है। वह चर्चा जारी है, लेकिन मुझे ऐसा लगता है कि व्यवस्थाविवरण की पुस्तक की तारीख एक अत्यंत महत्वपूर्ण मुद्दा है। हां, ऐसा कुछ है जिसे मैं ड्यूटेरोनोमिक इतिहास कहूंगा, हालांकि मुझे नहीं लगता कि यह वैसा है जैसा नोथ इसे देखता है। प्रत्येक पुस्तक अपने आप में खड़ी है और ऐतिहासिक रूप से विश्वसनीय है। मुझे नहीं लगता कि वे अज्ञात लेखकों द्वारा वर्णित घटनाओं के लंबे समय बाद लिखे गए थे। वे वर्णन कर रहे थे कि वास्तव में क्या हुआ था, और जो वास्तव में हुआ था वह व्यवस्थाविवरण की श्रेणियों में फिट बैठता है क्योंकि मूसा ने प्रभु की ओर से बोलते हुए पहले ही कहा था, “यदि तुम आज्ञा मानो— आशीर्वाद; यदि तुम अवज्ञा करोगे—शाप और न्याय।” यह इज़राइल में अंतर्निहित है, जिसे जीवन का मार्ग चुनने या मृत्यु का मार्ग चुनने के लिए कहा गया था; विकल्प उनके सामने थे। यही व्यवस्थाविवरण की पुस्तक का जोर था। ये एक बड़ा मुद्दा बन जाता है। मुझे लगता है कि क्लाइन ने जो तर्क दिया है वह महत्वपूर्ण है क्योंकि, हालांकि यह ड्यूटेरोनोमी की तारीख को साबित नहीं करता है (मुझे नहीं लगता कि यह संभव है), यह निश्चित रूप से उस दिशा में इशारा करता है। मैं सोचता हूँ कि अंततः आपको व्यवस्थाविवरण की तारीख को इस आधार पर स्वीकार करना होगा

कि वह अपने बारे में क्या कहती है। लेकिन ऐतिहासिक डेटा व्यवस्थाविवरण के पाठ में बताई गई बातों से मेल खाता है या उनकी पुष्टि करता है।

2. मूसा की मृत्यु संख्या 2. यह "मूसा की मृत्यु" है जो अध्याय 34 है। अध्याय 34 बारह छंद है। आपने श्लोक 7 में पढ़ा, "जब मूसा की मृत्यु हुई तब वह 120 वर्ष का था।" वह नीबो पर्वत पर था जहाँ से वह कनान देश को देख सकता था। पद 4 में प्रभु ने उससे कहा, "यह वह देश है जिसका वादा मैंने इब्राहीम, इसहाक और याकूब को शपथ खाकर दिया था। मैं इसे तुम्हारे वंशजों को दूँगा। मैं ने तुम्हें इसे अपनी आंखों से देखने दिया है, परन्तु तुम इसमें प्रवेश न करोगे।" फिर वर्णनकर्ता ने श्लोक 10 में आगे कहा, "तब से इस्राएल में मूसा के समान कोई भविष्यद्वक्ता नहीं हुआ, जिसे यहोवा आमने सामने जानता था, और जिसने वे सब चमत्कार और चिन्ह दिखाए, जिन्हें करने के लिए यहोवा ने उसे मिस्र में भेजा था।" यह बिल्कुल स्पष्ट है कि वह अध्याय व्यवस्थाविवरण की पुस्तक में निष्कर्ष के रूप में जोड़ा गया था। *महान राजा की संधि*, ड्यूटेरोनॉमी की पुस्तक पर अपनी टिप्पणी में, मेरेडिथ क्लाइन ने उल्लेख किया है कि ड्यूटेरोनॉमी की पुस्तक में बड़ी चीजों में से एक मूसा से जोशुआ तक नेतृत्व का संक्रमण है, और आप यहां इसका उचित मात्रा में संदर्भ देख सकते हैं। यह पुस्तक का निष्कर्ष है; यहोशू में परिवर्तन पुराने नियम में पूरा हो गया है।

पुराने नियम में अगली पुस्तक जोशुआ की पुस्तक है। यहोशू 1:1 शुरू होता है, "यहोवा के सेवक मूसा की मृत्यु के बाद, यहोवा ने नून के पुत्र यहोशू, जो मूसा का सहयोगी था, से कहा: 'मेरा सेवक मूसा मर गया है। अब तुम और ये सब लोग यरदन नदी पार करने के लिये तैयार हो जाओ।'" तो यह मोआब के मैदानों पर मूसा से यहोशू तक का संक्रमण है।

तृतीय. जोशुआ ए. परिचयात्मक टिप्पणियाँ 1. मूल विषय और संरचना

आइए रोमन अंक III पर चलते हैं। "यहोशू की किताब।" A. "परिचयात्मक टिप्पणियाँ" है और 1. A. के अंतर्गत "मूल विषयवस्तु और संरचना" है। मुझे लगता है कि जोशुआ की किताब के विभिन्न हिस्सों को एकता प्रदान करने वाले विषय को इस तरह रखा जा सकता है: यह जोशुआ के नेतृत्व में वादा किए गए देश में इज़राइल की स्थापना का वर्णन करता है। स्थापना में तीन तत्व

शामिल हैं: प्रवेश (जॉर्डन नदी को पार करना), विजय (पहले एक दक्षिणी अभियान और फिर एक उत्तरी अभियान), और भूमि का विभाजन। पुस्तक के अंत में, जोशुआ प्रत्येक विशेष जनजाति की सीमाओं का वर्णन करता है। तो मुख्य विषय जोशुआ के नेतृत्व में वादा किए गए देश में इज़राइल की स्थापना है, जिसमें प्रवेश, विजय और भूमि का विभाजन शामिल है।

उस विषय का पूर्वानुमान और आरंभ पुस्तक के पहले अध्याय में किया गया है। पहले अध्याय में, आपने पद 2 में जॉर्डन नदी को पार करने का संदर्भ दिया है: “मेरा सेवक मूसा मर गया है। तो अब तुम और यह सब लोग यरदन नदी पार करके उस देश में जाने के लिये तैयार हो जाओ जिसे मैं इस्राएलियों को देने पर हूँ।” श्लोक 2 में 1:10 से 4:24 तक का पूर्वानुमान है, क्योंकि यहोशू 1:10 से 4:24 में आपके पास उन घटनाओं का वर्णन है जो जॉर्डन नदी के वास्तविक पार के आसपास थीं। अध्याय 1 के श्लोक 5 में आपने पढ़ा, “तुम्हारे जीवन भर कोई तुम्हारे विरुद्ध खड़ा न रह सकेगा। जैसे मैं मूसा के साथ था, वैसे ही तुम्हारे साथ भी रहूँगा। मैं तुम्हें कभी नहीं छोड़ूँगा या तुम्हें कभी नहीं त्यागूँगा।” श्लोक 5 अध्याय 5-12 की भविष्यवाणी करता है, जो विजय का वर्णन करने वाले अध्याय हैं। श्लोक 6 कहता है, “मजबूत और साहसी बनो क्योंकि तुम इन लोगों को उस देश का अधिकारी बनाओगे जिसे देने की मैंने उनके पूर्वजों से शपथ खाई थी।” भूमि का उत्तराधिकार - यहोशू 1 श्लोक 6 अध्याय 13-22 का अनुमान लगाता है जहां आपके पास विभिन्न जनजातियों के बीच उस भूमि के विभाजन का विस्तृत विवरण है। और फिर अध्याय 1 के श्लोक 7-8: “मजबूत और बहुत साहसी बनो। जो व्यवस्था मेरे दास मूसा ने तुम्हें दी है उन सभों के मानने में चौकसी करना; उस से न तो दाहिनी ओर मुड़ना, न बाईं ओर, कि जहां जहां तू जाए वहां सफल हो। व्यवस्था की यह पुस्तक तुम्हारे मुंह से उतरने न पाए; दिन रात उस पर ध्यान करो, ताकि तुम उस में लिखी हुई हर बात को करने में चौकसी करो। फिर तुम्हारी गिनती संपन्न और सफल लोगों में होगी।” यह पुस्तक के अंतिम दो अध्यायों, अध्याय 23 और 24 का अनुमान लगाता है, जहां यहोशू अपने पहले मूसा की तरह, इज़राइल को एक साथ बुलाकर उन्हें वाचा के प्रति वफादार रहने के लिए चुनौती देता है, क्योंकि यहोशू मरने वाला है। हमें नेतृत्व का एक और परिवर्तन मिलता है, और एक और अवसर जिसमें वाचा का नवीनीकरण उचित है, नेतृत्व के उस परिवर्तन के माध्यम से वाचा

की निरंतरता की देखभाल करने के लिए - जैसा कि आपने मूसा से जोशुआ तक व्यवस्थाविवरण के अंत में किया था। इसलिए, यहोशू की पुस्तक में जो कुछ भी है, वह पहले अध्याय में पहले से ही अनुमानित है, जिन छंदों को हमने देखा है।

एक। भूमि भगवान की ओर से एक उपहार के रूप में

एक और विषय है जो पुस्तक में बार-बार दोहराया जाता है। यह पहले अध्याय में भी पाया जाता है, और वह यह है कि भूमि अपने लोगों के लिए ईश्वर का एक उपहार है और यह केवल ईश्वर की सहायता और उसकी कृपा से ही प्राप्त होगी। अध्याय 1 के श्लोक 2 को देखें: “यरदन नदी को पार करके उस देश में जाने के लिये तैयार हो जाओ जो मैं उन्हें देने पर हूँ; “यहोवा अपनी प्रजा को भूमि दे रहा है। श्लोक 3 , “मैं तुम्हें वह सब स्थान दूँगा जहाँ तुम अपने पैर रखोगे।” पद 6 , “तू इन लोगों को उस देश का अधिकारी कर देगा, जिसे देने की शपथ मैं ने इनके पूर्वजों से खाई थी।” श्लोक 11 , “शिविर के चारों ओर जाओ और लोगों से कहो, 'अपनी आपूर्ति तैयार करो। अब से तीन दिन के बाद तुम यर्दन पार करके उस देश पर अधिकार करोगे जो तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हें अपने अधिकार के लिये देता है । श्लोक 13, "यह आदेश याद करो जो यहोवा के सेवक मूसा ने तुम्हें दिया था: 'तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हें विश्राम देता है और उसने तुम्हें यह देश दिया है।" श्लोक 15, "जब तक प्रभु उन्हें विश्राम नहीं देता, जैसा उसने किया है तुम और जब तक वे भी उस देश पर अधिकार न कर लें जो यहोवा तुम्हारा परमेश्वर उन्हें देता है।" रूबेन, गाद और मनश्शे के आधे गोत्र यरदन नदी के पूर्वी किनारे पर रहने वाले थे। तो वह भाषा पुस्तक में विशिष्ट है। भूमि ईश्वर का अपने लोगों के लिए एक उपहार है और यह ईश्वर की कृपा और ईश्वर की सहायता से प्राप्त हुई है।

अध्याय 6 पर जाएँ जहाँ जेरिको को लेने का वर्णन किया गया है। पद 2 पर ध्यान दें। "यहोवा ने यहोशू से कहा, 'देख, मैंने यरीहो को उसके राजाओं और योद्धाओं समेत तेरे हाथ में कर दिया है।" इस्राएल को उस पहले शहर को कैसे लेना चाहिए? प्रभु इसे उन्हें देने जा रहे थे। “मैंने जेरिको को तुम्हारे हाथ में सौंप दिया है।” यहोशू 10:42 को देखें: "ये सभी राजा [ये कनान देश के दक्षिणी

भाग के राजा हैं] और उनकी भूमि यहोशू ने एक अभियान में जीत ली [क्यों?], क्योंकि इस्राएल के परमेश्वर यहोवा ने इस्राएल के लिए लड़ाई लड़ी थी" ।" यहोशू 21:43 को देखें—यह एक प्रकार का सारांश है: " तब यहोवा ने इस्राएल को वह सारा देश दे दिया जिसे देने की उस ने उनके पूर्वजों से शपथ खाई थी, और उन्होंने उस पर अधिकार कर लिया और वहां बस गए।" यहोवा ने उनको चारों ओर से विश्राम दिया, जैसा उस ने उनके पुरखाओं से शपथ खाई थी। उनके शत्रुओं में से किसी ने भी उनका सामना नहीं किया; यहोवा ने उनके सब शत्रुओं को उनके वश में कर दिया। इस्राएल के घराने के लिये यहोवा की सब अच्छी प्रतिज्ञाओं में से एक भी पूरी नहीं हुई; हर एक पूरा हुआ. यहोशू 23:1, "बहुत समय बीत जाने के बाद यहोवा ने इस्राएल को उनके चारों ओर के सब शत्रुओं से विश्राम दिया।" यहोशू 24:8, "मैं तुम्हें एमोरियों के देश में ले आया, जो यरदन के पूर्व में रहते थे। वे तुम्हारे विरुद्ध लड़े, परन्तु मैंने उन्हें तुम्हारे हाथ में दे दिया। मैंने उन्हें नष्ट कर दिया..." फिर 24:10, " परन्तु मैं ने बिलाम की न सुनी, इसलिये उस ने तुझे बारंबार आशीर्वाद दिया, और मैं ने तुझे उसके हाथ से बचाया।" अध्याय 24 का पद 13, " अतः मैं ने तुम्हें वह देश दिया जिस में तुम ने कुछ परिश्रम न किया, और जो नगर तुम ने न बनाए; और तुम उन में रहते हो, और दाख की बारियों और जैतून के बागों का फल खाते हो, जो तुम ने नहीं लगाए। 'क्या आपने वह देखा?—विषय यह है कि भूमि ईश्वर की ओर से अपने लोगों को एक उपहार है।

बी। जोशुआ एक संक्रमण पुस्तक के रूप में

मुझे लगता है कि यह पुस्तक , आप कह सकते हैं, पेंटाटेच और पुराने नियम के शेष भाग के बीच एक संक्रमण बनाती है। पूर्वव्यापी रूप से देखने पर, यह पता चलता है कि भगवान ने इब्राहीम, इसहाक, याकूब और हाल ही में मूसा से जो वादा किया था, उसके अनुरूप वे कैसे कनान देश में बस गए। तो पूर्वव्यापी रूप से आप उन वादों की पूर्ति देखते हैं। आप अध्याय 1 के श्लोक 3 पर ध्यान दें: " जैसा कि मैंने मूसा से वादा किया था, मैं तुम्हें वह सब स्थान दूंगा जहां तुम पैर रखोगे।" यहोशू 21:43 (हमने पहले ही इस पर गौर कर लिया है), "अतः यहोवा ने इस्राएल को वह सारी भूमि दे दी जिसके विषय में उस ने उनके पूर्वजों से शपथ खाई थी" - अर्थात् इब्राहीम, इसहाक और

याकूब को। तो पूर्वव्यापी रूप से, आप उस वादे की पूर्ति देखते हैं।

संभावित रूप से, आगे देखने पर, हमें त्रि-स्तरीय संपत्ति का विस्तृत विवरण मिलता है, जो अधिकांश भाग पुराने नियम के शेष काल तक जोशुआ के पास बरकरार रहा। यह वादा किए गए देश में इज़राइल के जीवन की शुरुआत का वर्णन करता है, कुछ ऐसा जिसका वादा सदियों पहले किया गया था और अब एक वास्तविकता थी। तो एक तरह से इज़राइल अपने इतिहास के उच्चतम बिंदु पर है, लेकिन साथ ही इज़राइल एक चौराहे पर है क्योंकि वहाँ एक खुला प्रश्न है। मूसा ने विकल्प निर्धारित किए थे: आप आज्ञाकारिता के परिणामस्वरूप धन्यता में रह सकते हैं, या आप अवज्ञा के परिणामस्वरूप न्याय में रह सकते हैं। इस्राएल का दायित्व प्रभु से प्रेम करना और उसकी सेवा करना है, जैसा कि मूसा ने व्यवस्थाविवरण में कहा था।

सी। सेवा विषय      वह शब्द "सेवा" एक अन्य विषय है जो पुस्तक में चलता है। इस्राएल को यहोवा की सेवा करनी है। यहोशू अध्याय 24 में उस शब्द के साथ इज़राइल को बार-बार चुनौती देता है, जहाँ यह 16 बार आता है। वह यहोशू 24:15 में कहता है, "मैं और मेरा घराना, हम यहोवा की सेवा करेंगे।" "आप किसकी सेवा करने जा रहे हैं?" क्या प्रश्न है। हम पाते हैं कि यहोशू के दिनों तक इज़राइल अधिकांशतः वफादार बना रहा। यहोशू 24:31 में पुस्तक के ठीक अंत में, आप पढ़ते हैं, "इस्राएल ने यहोशू और उन पुरनियों के जीवन भर यहोवा की सेवा की जो उसके जीवित रहे और जिन्होंने सब कुछ अनुभव किया था जो यहोवा ने इस्राएल के लिए किया था।" इसलिए यहोशू के समय में चीजें काफी अच्छी तरह से चल रही थीं, हालांकि कुछ अपवाद भी हैं, जैसे कि आकान के मामले में, जिसने समर्पित चीजों में से कुछ को अपने लिए ले लिया और उसका न्याय किया गया।

उन अंतिम दो अध्यायों में यहोशू ने जो किया वह इज़राइल को चेतावनी देना है, जैसा कि मूसा ने किया था, कि यदि वे वाचा तोड़ते हैं तो अंततः उन्हें इस भूमि से निकाल दिया जाएगा जो उन्हें दी गई थी। यदि आप यहोशू 23:12 को देखें, तो यहोशू कहता है, "परन्तु यदि तू उन जातियों के बचे हुए लोगों से जो तुम्हारे बीच में बचे हुए हैं, मुंह मोड़कर उनके साथ हो ले, और उनके साथ विवाह-विवाह करके उनके साथ मेलजोल रखे, तो तू निश्चित हो जा। तेरा परमेश्वर यहोवा अब इन

जातियों को तेरे साम्हने से न निकालेगा। वरन वे तुम्हारे लिये फंदे और जाल, और तुम्हारी पीठ पर कोड़े और तुम्हारी आंखों में कांटे ठहरेंगे, जब तक कि तुम इस अच्छे देश में से, जो तुम्हारे परमेश्वर यहोवा ने तुम्हें दिया है, नष्ट न हो जाओ। यदि आप अध्याय 23 पद 15 पर जाते हैं, तो यहोशू कहता है, " परन्तु जैसे तेरे परमेश्वर यहोवा की सब अच्छी प्रतिज्ञाएं पूरी हुई हैं, वैसे ही यहोवा ने जिस प्रकार की विपत्ति की धमकी दी है वह सब तुझ पर डालेगा, जब तक कि वह तुझे इस भलाई से नष्ट न कर दे।" वह भूमि जो उसने तुम्हें दी है। यदि तुम अपने परमेश्वर यहोवा की उस वाचा को तोड़ोगे, जो उस ने तुम को दी है, और जाकर पराये देवताओं की उपासना करो, और उनको दण्डवत् करो, तो यहोवा का कोप तुम पर भड़केगा, और तुम उस अच्छे देश में से जो उस ने तुम्हें दिया है शीघ्र नष्ट हो जाओगे। " तो ये वही विकल्प हैं जो मूसा ने व्यवस्थाविवरण की पुस्तक में दिए थे।

इजराइल एक चौराहे पर है। इजराइल क्या करने जा रहा है? यहोशू के समय में उन्होंने काफी अच्छा प्रदर्शन किया, लेकिन बहुत जल्द जब हम यहोशू की मृत्यु के बाद न्यायाधीशों की पुस्तक में आते हैं, तो आपको धर्मत्याग, उत्पीड़न, पश्चाताप और मुक्ति का दोहराया चक्र मिलता है। हालाँकि, पुस्तक स्वयं आशावाद और सफलता की एक अच्छी छाप देती है। मुझे लगता है कि कई मायनों में यह नए नियम में अधिनियमों की पुस्तक के समान है जहां प्रारंभिक चर्च को उसके आध्यात्मिक जीवन में एक उच्च बिंदु पर चित्रित किया गया है। अधिनियमों की पुस्तक में आपके पास अनन्या और सफ़ीरा जैसी कुछ समस्याएं हैं जो यहोशू की पुस्तक में आकान की समस्या के समानांतर हैं। अग्रभूमि में, अधिनियमों की पुस्तक पवित्र आत्मा की पूजा और सुसमाचार का प्रसार है। तो ये जोशुआ के मूल विषय और संरचना के बारे में कुछ टिप्पणियाँ हैं।

2. जोशुआ का प्राथमिक चरित्र या व्यक्तित्व "प्राथमिक चरित्र या व्यक्तित्व" जो जोशुआ का नंबर 2 है। मैं यहां आपका ध्यान किसी चीज़ की ओर आकर्षित करना चाहता हूं। यदि आप संख्या 13 पर जाते हैं (यह उस अध्याय में है जब कादेश बर्निया में जासूसों का चयन किया जा रहा है), तो आप श्लोक 8 में पढ़ते हैं, " एप्रैम के गोत्र से, नून का पुत्र होशे।" और यदि आप इसे हिब्रू में देखें, तो इसमें "होशे" पढ़ा जाता है जिसका अर्थ है प्रभु से "उद्धार" या "मदद"। लेकिन यदि आप संख्या 13

के पद 16 पर जाएं तो आप पढ़ेंगे: “ये उन लोगों के नाम हैं जिन्हें मूसा ने भूमि का पता लगाने के लिए भेजा था। (मूसा ने नून के पुत्र होशे को यहोशू नाम दिया।)” अतः मूसा ने यहोशू का नाम होशे से बदलकर यहोशू रख दिया। हिब्रू में *होशे से यहोशू* आतक है। अब क्या फर्क है? *यहोशू* आ "प्रभु मोक्ष है।" शुरुआत में वह "यी" यहोवा का संक्षिप्त रूप है। तो "यहोवा मोक्ष है।" यदि आप आगे उस नाम के उपयोग का पता लगाते हैं, तो सेप्टुआजेंट *यहोशू* आ, या "जोशुआ" का अनुवाद "यीशु" के रूप में करता है, जिसे आप नए नियम में आने पर ग्रीक में यीशु को दिए गए नाम के रूप में तुरंत पहचान लेते हैं। तो, जो हिब्रू "यीशु" के पीछे खड़ा है उसका नाम "जोशुआ" है। हिब्रू में "जोशुआ" वास्तव में ग्रीक में "यीशु" के समान नाम है। तो यहोशू प्राथमिक पात्र है। वह वह नेता है जो मूसा की जगह लेता है और इज़राइल को जॉर्डन के पार और भूमि पर विजय और विभाजन की ओर ले जाता है।

3. जोशुआ संख्या 3 में दर्ज ऐतिहासिक घटनाओं के लिए बाहरी साक्ष्य "यहोशू में दर्ज ऐतिहासिक घटनाओं के लिए बाहरी साक्ष्य" है। मैं पुरातात्विक खोजों पर कुछ संक्षिप्त टिप्पणियाँ करना चाहता हूँ जो जोशुआ की पुस्तक के समय से संबंधित हैं। ऐसी कोई बड़ी बात नहीं है जो बिल्कुल लागू हो। बस तीन हैं. निर्गमन की तारीख की चर्चा के संबंध में हम पहले ही इस बारे में बात कर चुके हैं।

एक। अमर्ना पत्र

पहली है टेल एल -अमरना टैबलेट। अमर्ना गोलियाँ मिस्र के फिरौन और कनान देश के कुछ शहर-राज्यों के बीच पत्राचार हैं। वे लगभग 1400-1350 ईसा पूर्व लिखे गए थे, उनकी खोज 1800 के अंत में हुई थी। यह उन गोलियों में है जिनमें आपको उन लोगों का संदर्भ मिलता है जिन्हें हबीरू कहा जाता है जिनके बारे में हमने पहले बात की थी। सवाल उठता है: क्या हिब्रू हबीरू हैं? यरूशलेम के राजा कहते हैं, "हबीरू हमला कर रहे हैं और मुझे आपकी मदद की ज़रूरत है," मिस्र के फिरौन से सहायता का अनुरोध करते हुए। आपको याद होगा इब्रानियों को हबीरू माना गया होगा, लेकिन सभी हबीरू इब्रानी नहीं हैं। हबीरू एक जातीय समूह से अधिक एक सामाजिक

वर्ग थे।

बी। मेरनेष्टाह स्टेला

दूसरा जिसका मैं उल्लेख करना चाहता हूँ वह है "इज़राइल स्टेला" या "मेरनेष्टाह स्टेला।" यह मेरनेष्टा का वह स्तंभ है जिसमें "कनान देश में इसराइल" का उल्लेख है। उन्होंने जिन लोगों की सूची का हवाला दिया उनमें "इज़राइल" नाम शामिल है। वह मेरनेष्टा शिलालेख 1220 ईसा पूर्व का हो सकता है, जो इंगित करता है कि इज़राइल 1220 ईसा पूर्व भूमि पर था। यह किसी भी अतिरिक्त-बाइबिल पाठ में इज़राइल का सबसे पहला उल्लेख है।

सी। शहरों में विनाश का स्तर तीसरी बात, जिस पर हमने चर्चा की, और वह है कनान देश के शहरों में विनाश का स्तर, जो लगभग तेरहवीं शताब्दी ईसा पूर्व के उत्तरार्ध का है। 1250 ईसा पूर्व जोशुआ की किताब में वर्णित कई शहरों की खुदाई की गई है और उस अवधि में विनाश के स्तर पाए गए हैं। लेकिन जैसा कि हमने पहले चर्चा की थी और जैसा कि आप मेरिल को पढ़ने से याद करते हैं, यहोशू की पुस्तक में केवल जेरिको, ऐ और हाज़ोर हैं जिनके बारे में विशेष रूप से कहा गया है कि उन्हें नष्ट कर दिया गया है। मुझे लगता है कि असली सवाल यह है कि क्या इन विनाश स्तरों को विजय के साथ पहचाना जा सकता है, या क्या वे बाद के न्यायाधीशों के काल से हैं। पुरातात्विक सामग्रियों की ये तीन श्रेणियां हैं।

#### 4. कनान में इज़राइल की स्थापना के लिए समकालीन दृष्टिकोण

आपकी रूपरेखा में संख्या 4 है: "कनान में इज़राइल की स्थापना के लिए समकालीन दृष्टिकोण।" मैंने सोचा कि थोड़ा सा समय बचाने के लिए मैं इसे एक हैंडआउट के रूप में दूंगा। मेरिल ने *द किंगडम ऑफ़ प्रीस्ट्स* के अपने खंड में पृष्ठ 122-128 पर इस सामग्री पर चर्चा की है। कनान देश में इज़राइल की स्थापना कब और कैसे हुई, इस मुद्दे पर बहस जारी है। यहां तीन समकालीन स्थितियां सूचीबद्ध हैं: बाइबिल सामग्री से लिया गया पारंपरिक विजय मॉडल, एक

प्रवासन या घुसपैठ मॉडल, और तीसरा एक किसान विद्रोह मॉडल। यदि आप आधुनिक बाइबिल अध्ययन छात्रवृत्ति को देखें तो कोई वर्तमान सहमति नहीं है। लेकिन मुख्यधारा के बाइबिल विद्वानों के बीच स्पष्ट रूप से प्रवृत्ति पारंपरिक विजय सिद्धांत से दूर जाने की है।

एक। विजय मॉडल तो आइए संक्षेप में इन तीन दृष्टिकोणों पर नजर डालें। विजय मॉडल यह है: इज़राइल ने अपनी सीमाओं के बाहर से भूमि पर आक्रमण किया, तेजी से हमलों की एक श्रृंखला के माध्यम से प्रतिरोध को तोड़ दिया, और फिर विभिन्न क्षेत्रों में कब्ज़ा पूरा करने के लिए बस गया। अगले पैराग्राफ में मैंने उल्लेख किया है कि इस दृष्टिकोण के कुछ समर्थक 1250-1200 ईसा पूर्व के विनाश के स्तर के पुरातात्विक साक्ष्य की अपील करते हैं, लेकिन मुझे लगता है कि इस पूरे मुद्दे पर हाल ही में सवाल उठाया गया है। पृष्ठ 1 पर उस अंतिम पैराग्राफ में, मैंने नोट किया है कि हाल के वर्षों में विजय सिद्धांत का एक अधिक सूक्ष्म संस्करण विकसित किया गया है, जिसमें दृष्टिकोण का समर्थन करने के लिए तेरहवीं शताब्दी के उत्तरार्ध के विनाश स्तरों का हवाला नहीं दिया गया है। यूजीन मेरिल और डेविड हॉवर्ड, जिन्होंने न्यू अमेरिकन कमेंटरी में जोशुआ पर एक टिप्पणी लिखी थी जो काफी अच्छी है, उन लोगों में से हैं जो तर्क देते हैं कि केवल तीन कनानी शहर नष्ट हुए थे: जेरिको, ऐ और हाज़ोर। मेरिल टिप्पणी करते हैं, "एक बार कोई यह समझ लेता है कि हेरम केवल आबादी पर लागू होता है, स्थानों पर नहीं और केवल जेरिको, ऐ और हाज़ोर पर।" और फिर मैंने बिम्सन का उल्लेख किया जो मध्य कांस्य युग की तारीख को कम करके एक अलग मॉडल के साथ काम करता है, डेटिंग को 1400 के दशक तक धकेलता है ताकि यह बाइबिल मॉडल या विजय मॉडल के साथ फिट हो सके। तो यह कुछ बदलावों के साथ पारंपरिक विजय मॉडल है।

बी। प्रवासन या घुसपैठ मॉडल

"प्रवासन या घुसपैठ मॉडल" कहता है, कनान पर कोई वास्तविक सैन्य हमला नहीं था, बल्कि दक्षिण और पूर्व के रेगिस्तानों से देहाती खानाबदोशों द्वारा क्रमिक घुसपैठ हुई थी। वे खानाबदोश कनानियों के साथ अच्छे संबंधों में रहते थे, यहाँ तक कि उनके साथ अंतर्जातीय विवाह भी करते थे। ग्यारहवीं शताब्दी तक जब वे उपजाऊ मैदानों में चले गए तब तक वे गंभीर संघर्ष में

नहीं पड़े। वह थीसिस मूल रूप से 1925 में प्रस्तावित की गई थी और उसके बाद मार्टिन नोथ (जिन्होंने ड्यूटेरोनोमिस्टिक इतिहास विकसित किया था), और हाल ही में मिलर, योहानन अहरोनी और मोशे कोटावी द्वारा प्रस्तावित किया गया था। निपटान की वास्तविक प्रक्रिया खानाबदोशों की ओर से गतिहीन जीवन में शांतिपूर्ण परिवर्तन थी; केवल दूसरे चरण में ही इस्राएली कभी-कभार सैन्य कार्रवाई में शामिल हुए। निःसंदेह, यदि आप ऐसा दृष्टिकोण अपनाते हैं, तो आपको जोशुआ की पुस्तक में दिए गए विवरण को नजरअंदाज करना होगा।

सी। किसान विद्रोह मॉडल "किसान विद्रोह मॉडल" एक तीसरा दृष्टिकोण है जो कहता है कि किसी बाहरी राज्य से आक्रमण नहीं हुआ था, बल्कि यह इज़राइल की भूमि के भीतर एक विद्रोह था। जॉर्ज मेंडेनहॉल ने कहा कि सामान्य अर्थों में कोई विजय नहीं थी, लेकिन कनानी शहर-राज्य प्रणाली से नाखुश ग्रामीण किसानों ने "यहोवा के वाचा समुदाय के पक्ष में एकमात्र राजनीतिक विचारधारा को खारिज कर दिया।" उनका तर्क है कि 1200 ईसा पूर्व के आसपास फ़िलिस्तीन पर कोई सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण आक्रमण नहीं हुआ था, जनसंख्या का कोई आमूल-चूल विस्थापन नहीं हुआ था। कोई नरसंहार नहीं हुआ। बड़े पैमाने पर आबादी को बाहर नहीं निकाला गया, केवल एक शाही प्रशासनिक बदलाव हुआ। फ़िलिस्तीन पर उस अर्थ में कोई वास्तविक विजय नहीं हुई जैसा आमतौर पर समझा जाता है। इसके बजाय, सामाजिक-राजनीतिक प्रक्रियाओं में रुचि रखने वाले धर्मनिरपेक्ष इतिहासकार के दृष्टिकोण से, कनानी शहर-राज्यों के नेटवर्क के खिलाफ किसानों का विद्रोह हो सकता है।

मेंडेनहॉल के किसान विद्रोह मॉडल का एक और अनुकूलन और संशोधन नॉर्मन गॉटवालड है। गोटवालड की *द ट्राइब्स ऑफ़ याहवे: ए सोशियोलॉजी ऑफ़ रिलिजन ऑफ़ लिबरेटेड इज़राइल* के प्रचार के साथ आंतरिक विद्रोह मॉडल ने एक नया मोड़ लिया। उनका दूसरा खंड *द हिब्रू बाइबिल: ए सोशल लिटरेरी इंट्रोडक्शन* है। गोटवालड इसे मार्क्सवादी दार्शनिक दृष्टिकोण से देखते हैं। वह मेंडेनहॉल से सहमत हैं कि इज़राइल की उत्पत्ति का पता कनानी समाज के भीतर एक क्रांतिकारी सामाजिक आंदोलन से लगाया जा सकता है, लेकिन वह मेंडेनहॉल की मूल थीसिस से

हटकर कहते हैं कि वह इस बात से इनकार करते हैं कि क्रांति कम से कम कुछ हद तक यहूदीवादी धार्मिक उत्साह से प्रेरित थी। दरअसल, उनका तर्क है कि इस आदेश को उलटने की जरूरत है। याहविज़्म केवल क्रांति के एक कार्य के रूप में उभरा। यह वह क्रांति थी जिसने वे परिस्थितियाँ निर्मित कीं जिनके तहत याह्विज़्म का उदय हुआ। इस प्रकार धर्म वर्ग संबंधों का एक कार्य बन जाता है: शक्तिशाली अपने वर्ग संघर्ष को मान्य करने के लिए शक्तिहीनों पर अपनी श्रेष्ठ स्थिति को उचित ठहराते हैं। मेंडेनहॉल ने गोटवाल्ड के किसान विद्रोह के संशोधन को दृढ़ता से खारिज कर दिया। इस प्रकार का शोध आप वर्तमान में पाठ्यपुस्तकों और लेखों में पाते हैं।

डी। जॉन ब्राइट की विभिन्न स्थितियाँ अब यदि आप पृष्ठ 4 की ओर मुड़ें, तो मुझे लगता है कि यह दिलचस्प है। जॉन ब्राइट की *प्राचीन इज़राइल का इतिहास* प्राचीन इज़राइल के इतिहास पर एक मानक पाठ्यपुस्तक रही है। जॉन ब्राइट दक्षिणी प्रेस्बिटेरियन सेमिनरी, वर्जीनिया में यूनियन सेमिनरी में पुराने नियम के प्रोफेसर थे। वह अब सेवानिवृत्त हो चुके हैं। उनकी पुस्तक *प्राचीन इज़राइल का इतिहास* 4 संस्करणों में प्रकाशित हुई। मेरे पास यहां तीन कॉलम हैं जो पहले संस्करण 1960, दूसरे संस्करण 1972 और उनके तीसरे संस्करण 1981 को दर्शाते हैं। ध्यान दें कि 1960 से 1981 तक बीस वर्षों की अवधि में उनका दृष्टिकोण कैसे बदलता है। 1960 में, वह विजय के बारे में कहते हैं, "इन द तेरहवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में, जैसा कि पुरातात्विक साक्ष्य प्रचुर मात्रा में प्रमाणित करते हैं, पश्चिमी फ़िलिस्तीन पर एक बड़ा हमला हुआ। कुछ पंक्तियों में, "इसमें संदेह करने का कोई कारण नहीं है कि यह विजय, जैसा कि जोशुआ की पुस्तक में दर्शाया गया है, एक खूनी क्रूर व्यवसाय था। यह यहोवा का पवित्र युद्ध था जिसके द्वारा वह अपने लोगों को प्रतिज्ञा की भूमि देगा।" यह काफी हद तक जोशुआ में आपने जो पढ़ा है उसका प्रतिबिंब है। यदि आप 1972 के संस्करण को देखें, तो ध्यान दें कि वह क्या कहते हैं: "मेरी पिछली प्रस्तुति को जीई मेंडेनहॉल के महत्वपूर्ण लेख के आलोक में संशोधित किया गया है।" अब मेंडेनहॉल किसान विद्रोह मॉडल के समर्थक थे। वह कहते हैं, "हालांकि मेंडेनहॉल ने शायद खुद को कई जगहों पर सावधानी से व्यक्त किया है, किसी भी घटना में, रेगिस्तान से आने वाले समूह का आकार कुछ भी रहा हो, और यह

मेंडेनहॉल के विचार से बड़ा हो सकता है, इसकी महत्वपूर्ण भूमिका खतरे की थी।” फिर वह हिंसक आक्षेप के बारे में बोलता है और फिर अंतर्निहित वाक्य में कहता है, “सबूत की जटिलता को देखते हुए, आप उस कार्रवाई के विवरण को फिर से बनाने का काम नहीं कर सकते जिसके द्वारा यह पूरा किया गया था। लेकिन इसमें कोई संदेह नहीं है कि यह वैसा ही था जैसा बाइबिल में इसे यहोवा के पवित्र युद्ध के रूप में दर्शाया गया है।”

फिर उसके 1981 संस्करण पर जाएँ। पहली पंक्ति पर ध्यान दें. "यहां दी गई प्रस्तुति जीई मेंडेनहॉल के काम का पूरी तरह से अनुसरण करती है।" दूसरे शब्दों में, वह मूल रूप से जोशुआ में अर्ध-मेंडेनहॉल दृश्य के माध्यम से वर्णन से आगे बढ़ता है और काफी हद तक मेंडेनहॉल के दृष्टिकोण को अपनाता है। चर्चा किस दिशा में आगे बढ़ गई है, यह काफी सामान्य बात है। मुख्यधारा के बाइबिल अध्ययनों में आप इस किसान विद्रोह को एक काफी लोकप्रिय दृष्टिकोण पाएंगे, लेकिन आप जोशुआ की किताब में कही गई बातों के साथ इसका सामंजस्य नहीं बिठा सकते। लेकिन मुझे लगता है कि आपको उस स्थिति के बारे में पता होना चाहिए।

ब्राइट के तीसरे संस्करण में पृष्ठ 5 के शीर्ष पर जाएँ: “संदेह करने का कोई कारण नहीं है क्योंकि बाइबल इसे खूनी और क्रूर के रूप में दर्शाती है। यह यहोवा का पवित्र युद्ध था।” पृष्ठ 4 पर वापस जाएँ: “वास्तव में यह असंभव नहीं है कि अलग-अलग जनजातियों और जनजातियों के समूहों की ओर से शहर के स्वामियों के खिलाफ विद्रोह याहविस्ट के समय से पहले हो रहे थे, लेकिन यह नया विश्वास था जिसने इस संरचना को खत्म कर दिया था नियंत्रण का और उत्प्रेरक प्रदान किया जो इज़राइल को लोगों के रूप में एक साथ लाया। संघर्ष की प्रक्रिया लंबी अवधि की थी जिसका हम विस्तार से पुनर्निर्माण नहीं कर सकते।” इसलिए यहोवा इस किसान विद्रोह के दृष्टिकोण में भी शामिल हो गया है। मुझे यकीन नहीं है कि उन्होंने इसे हल कर लिया है। मुझे लगता है कि जोशुआ की किताब के पाठ को एक वैध ऐतिहासिक स्रोत के रूप में स्वीकार करने के बजाय इतिहास को फिर से बनाने के लिए समाजशास्त्रीय मॉडल का उपयोग करने की कोशिश करना इसे प्रेरित करता है। पुराने नियम के अध्ययनों में दिशा यह है कि ऐतिहासिक रूप से जो कुछ भी कहा जाएगा वह पुरातत्व पर आधारित होना चाहिए। आप ऐतिहासिक जानकारी खोजने के लिए बाइबिल के

पाठ में नहीं जाते, बल्कि आप पुरातत्व में जाते हैं। आप यथासंभव समाजशास्त्रीय स्थिति के पुनर्निर्माण के लिए पुरातत्व का उपयोग करते हैं। लेकिन वे ऐतिहासिक जानकारी के प्राथमिक स्रोत के रूप में बाइबिल पाठ पर नहीं जाते हैं।

यदि आप धर्मों के विश्वदृष्टिकोण के इतिहास को देखें, तो नए नियम की बाइबिल सामग्री की तुलना में पुराने नियम की बाइबिल सामग्री में विकास की एक अलग अवधि परिलक्षित होती है। पुराने नियम में हिंसा, युद्ध और रक्तपात का ईश्वर है और नये नियम में प्रेम, दया और अनुग्रह का ईश्वर है। और कुछ लोग उस मॉडल का उपयोग करते हैं। जब हम *हेरम* को देखेंगे तो हम इसके बारे में आगे बात करेंगे।

न्यूनतमवादी और ऐतिहासिक रूप से विश्वसनीय स्थिति आम तौर पर ऐतिहासिक रूप से विश्वसनीय पाठ का समर्थन करने वाले लोगों के बीच अभी एक लंबी चर्चा चल रही है। मैं इंजील जगत के लोगों के बारे में बात नहीं कर रहा हूँ। मैं कई साल पहले एक बैठक में था जिसमें एक विद्वान कुछ अतिसूक्ष्मवादियों के साथ बहस कर रहा था जो तर्क दे रहे थे कि डेविड और सोलोमन के समय में भी कोई एकीकृत राज्य नहीं था। यह तो एक छोटी सी सामाजिक संस्था थी। वे नौवीं और दसवीं शताब्दी और शाही इतिहास से छुटकारा पाना चाहते हैं। डेवर कह रहा था कि वह खुद को धर्मग्रंथ पर आधारित एक कट्टरपंथी के रूप में पहचानना नहीं चाहता है, जो कहता है कि सुलैमान एक विशाल साम्राज्य वाला एक शक्तिशाली शासक था। वह नहीं चाहते थे कि उन पर कट्टरपंथी का लेबल लगाया जाए। इस वाचन में उन्होंने कहा, “मैं इस बात का अंदाज़ा नहीं लगा सकता कि सुलैमान अस्तित्व में था जैसा कि बाइबिल में उसका वर्णन किया गया है या नहीं। लेकिन मामले की सच्चाई यह है कि पुरातात्विक साक्ष्य हमें बताते हैं कि उसने ऐसा किया था।” और उन्होंने कहा कि हमें सभी उत्तर-आधुनिक पूर्वधारणाओं से छुटकारा पाना होगा क्योंकि पुरातात्विक साक्ष्य बिल्कुल वैसा ही है जैसा बाइबिल में वर्णित है। तो उत्तर-आधुनिक व्याख्या इसमें आती है - न केवल इंजीलवादियों के बीच, बल्कि मुख्यधारा के विद्वानों के बीच जो पुरातात्विक निष्कर्षों के साथ जमीन से निकलने वाले वैज्ञानिक साक्ष्य के साथ काम कर रहे हैं। यह एक जटिल स्थिति है। केए किचन

पुराने नियम की ऐतिहासिक विश्वसनीयता के बारे में बात करता है और इस पर उत्कृष्ट पुस्तक लिखी है। लेकिन वहां उत्तर-आधुनिक लोग कह रहे हैं कि पुरातात्विक साक्ष्य मान्य नहीं हैं और वे अपने स्वयं के सैद्धांतिक पुनर्निर्माण को प्राथमिकता देते हैं।

टेड हिल्लेब्रांट द्वारा आंशिक रूप से प्रतिलेखित और कच्चा संपादित  
एलिजाबेथ फिशर  
द्वारा अंतिम संपादन      टेड हिल्लेब्रांट द्वारा पुनः सुनाया गया